>

Title: Need to declare Shri Kalyan Singh Rathore, a martyr who fought the 1971 Indo-Pak war and is since missing.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): आदरणीय सभापति जी अपने मुझे शून्य काल के अंतर्गत अपने संसदीय क्षेत्र साबरकांठा के एक युद्ध सैनिक के बारे में अपनी बात कहने का अवसर दिया है इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

सभापति जी, मेरे संसदीय क्षेत्र साबरकांठा के चांदरणी गांव के निवासी श्री कल्याणसिंह राठौर, जो सेना में असम रेजीमेंट में कैप्टन की जिम्मेदारी निभा रहे थे, जिनका आई.सी. नं. 23198 था।

महोदय, वर्ष 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान 5 दिसम्बर, 1971 के दिन जम्मू क्षेत्र में स्थित छाम्ब सैक्टर पर बलसारा पाइंट पर ड्यूटी पर वे तैनात थे। शाम के लगभग पांच बजे के आसपास दुश्मनों के साथ घमासान लड़ाई हो रही थी। आमने-सामने गोलीबारी हो रही थी। हमारी सैन्य टुकड़ी के पास गोला-बारूद कम हो रहा था। तभी कैप्टन कल्याण सिंह ने अपने साथियों का जीवन बचाने हेतु उन्हें पीछे जाने का आदेश दिया और खुद उसी स्थान पर डटकर अकेले दुश्मनों के साथ लड़ते रहें। रात के अंधेरे में दुश्मनों ने उन्हें चारो ओर से घेर लिया था।

महोदय, दूसरे दिन जब हमारी सैन्य टुकड़ी वहां पहुंची तो कल्याण सिंह नहीं मिले। शायद दुश्मनों ने उन्हें मारकर खाई में फेंक दिया हो या युद्धबंदी बना कर साथ ले गए हों, किसी को पता नहीं था।

महोदय, युद्ध के बाद युद्ध कैदियों की वापसी के दौरान भी कल्याण सिंह नहीं मिले। उन्हें खोजने का बहुत प्रयास किया गया। हमारी सरकार ने भी खोजने की बहुत कोशिश की। कल्याण सिंह के परिवार के सदस्य भी पाकिस्तान जा कर जेलों का ब्यौरा किया लेकिन कहीं से भी कल्याण सिंह का पता नहीं लगा। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया आप अपनी मांग रखिए।

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण : सभापति महोदय, लगता है कि कल्याण सिंह अब जीवित अवस्था में नहीं हैं उनकी मृत्यु हो चुकी है। वह देश के लिए शहिद हो चुके हैं। लेकिन हमारा रक्षा मंत्रालय उन्हें गुमशुदा या भगोड़ा मान रहा है जो सच नहीं लगता है।

सभापति महोदय, कल्याण सिंह चाहते तो वह भी पीछे हट सकते थे और अपनी जान बचा सकते थे। लेकिन देश की सुरक्षा हेतु वह अपनी जान की बाजी लगा कर वहां पर वह डटे रहें और अपने साथियों को बचाया। ऐसे में उन्हें भगोड़ा कहना ठीक नहीं है। एक शहीद का अपमान है।

कल्याण सिंह देश के लिए शहिद हुए हैं। आज पचास साल बीत जाने के बाद भी कल्याण सिंह को न्याय नहीं मिला है। हमारे क्षेत्र को न्याय नहीं मिला है। हमारी गुजरात सरकार ने उनके गांव चांदरणी की स्कूल को कैप्टन कल्याण सिंह स्कूल घोषित कर के सम्मान दिया है।

मेरा आपके माध्यम से रक्षा मंत्रालय से अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र के सपूत कल्याण सिंह राठौर को शहीद घोषित कर के, शौर्यचक्र से सम्मानित किया जाए एवं उनके परिवार को यथायोग्य आर्थिक मदद की जाए।